International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 5, May- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

e/; xxk ?kkVh dk Hkkxkfyd ifjnश;] tyok;] ouLifr vkj tho txr] ty lkr] lkLdfrd vuqde

MkO lckl pUn iky
ikphu bfrgkl] lLdfr ,o ijkrRo foHkkx
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

xxk unh Hkkjr dh vnHkr lkLdfrd /kjkgj gh ugh vfir lfn;k l Hkkjrh; tuekul dh ij.kk dk lkr jgh gA viu viokg {k= e egku lLdfr;k dk mrkj p<ko vkj ekuo dh mUufr&voufr dh xkFkk leV g, bl ifo= lfjrk dh egRrk dk o.ku vkfn dky l u doy ikjkf.kd vkj vk/;kfRed lkfgR; e feyrk g] vfir ykfdd साहित्य में भी इसकी विशिष्टता एवं महत्ता की अनेकानेक कथाएं और अन्तर्कथाएं प्राप्त होती हैं। समय–समय पर भारत में आने वाले विदेशी यात्रियों ने भी अपने यात्रा संस्मरणों और iLrdk e rRdkyhu Hkkjrh; tuekul e 0;klr budh egRrk dk foLrr o.ku fd;k gA

;g ikphu dky l Hkkjrh; lLdfr dh ,drk ,o ifo=rk dh irhd ekuh xbl gA लोक कथाओं तथा परम्पराओं में इसे शक्ति देने वाली 'गंगा माता' कहा गया है। चिरकाल से Hkkjr dh lkLdfrd ,drk dk ;g cधन इतना अटूट तथा शक्तिशाली है कि कोई भी शक्ति इसे नष्ट नहीं कर सकी। जन मानस में ऐसा विश्वास है कि गंगा के दर्शन मात्र से ही मुक्ति fey tkrh gA xxk dh noh; mRifRr l lEcfU/kr vud dFkk, ,o fdonfUr;k ipfyr gA

ikphu Hkkjrh; lkfgR; e xxk dh iरिकल्पना देवी के रूप में, श्वेत वस्त्र पहने हाथ में कमल लिए हुए तथा मकर पर बैठे हुए की गई है। ब्रम्हावैवर्त पुराण में शिव को गंगा की प्रशंसा में गीत गाते हुए वर्णित किया गया है। गंगा पापों से प्रायश्चित कराने का माध्यम है। tUe tUekUrj l ikfi;k }kjk fd; x; iki d <j dk Hkh xxk को स्पर्श करती हुई वायु

नष्ट कर देती है। महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व 18/23) के अनुसार युद्धिष्ठिर गंगा के पवित्र जल में स्नान करके अपने मानव शरीर को त्याग कर अमरत्व को प्राप्त हुए थे।

गंगा के स्वर्गावतरण के विषय में अनेक कथाएं प्रचलित हैं। tuJfr g fd xxk dk रघुवंशी भागीरथ अपने पूर्वजों–राजा सगर के साठ हजार पुत्रों की मुक्ति हेतु पृथ्वी पर लाये Fk ¼nc] 1942½ 40&45½A fo}kuk dk fopkj g fd xxk dh mRifRr frCcr e ekuljkoj d निकट कैलाश पर्वत से हुई है, किन्तु तब तक समुचित सर्वे{k.k ugh g, FkA vc bl ckr e lUng ugh g fd xxk dh mRifRr x<oky {k= l gb gA HkkxhjFkh xxk dh ie[k ty/kkjk gA xxk dk ey lkr fgekPNkfnr xxk=h d fudV xke[k uked LFkku g] tk len l 3831 ehVj Åpk gA ;g bl {k= d cM fgeufn;k e l ,d gA HkkxhjFkh 6600 ehVj तथा 6900 मीटर ऊँचे शिखर वाले हिम से आच्छादित चौखम्भा से बहती है। यह आश्चर्यजनिक तथ्य है कि यद्यपि भागीरथी गंगोत्री हिमनद से होकर बहती है, परन्तु यह गोमुख में आकर सूर्य के दर्शन करती है। bl Hkfexr unh vkfoHkko fgeun d fgefooj d ikuh d fi?kyu vkj iFoh d uhp&uhp cgu l gvkA fgeun l fudyu okyh fofHkUu NkVh ufn;k HkkxhjFkh e vkdj feyrh gA xxk=h d Bhd uhp HkkxhjFkh e nf{k.k l dnkj xxk vkdj feyrh gA

xxk=h d fudV len dh lrg l yxHkx 2985 ehVj Åij HkkxhjFkh cgrh gA xxk=h l yxHkx 1-6 fdeh uhp HkkxhjFkh e :nxxk unh feyrh g] ftldk lkr Hkh fgeun gA vkx pydj HkkxhjFkh e vud ufn;k vkdj feyrh g] ;Fkk&xxk ;k tkguoh] xexe ukyk] fryxk ukyk] dynhx<] lykyx<] oukjhx<] Hkhyuxxk vkfnA noi;kx rd bl unh dk uke HkkxhjFkh gA देवप्रयाग में आकर यह त्रिशूल के पश्चिमी ढाल पर स्थित fgeun l mRiUu vyduUnk unh l feyrh gA HkkxhjFkh unh e feyu d io :ni;kx uked LFkku ij vyduUnk unh eUnkfduh unh l feyrh gA

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 5, May- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

eUnkfduh unh ifl) dnkjukFk /kke के निकट ग्लेशियर से उत्पन्न होती है। HkkxhjFkh rFkk vyduUnk ufn;k noi;kx e vkil e feydj xxk uke /kkj.k djrh gA जल निस्तारण की दृष्टि से गंगा नदी विन्ध्य के उत्तरवर्ती तथा शिवालिक की पहाड़ियों के nf{k.korh ufn;k e lcl egRoi.k ,o foLrr unh gA xxk unh dh yEckb 2506 fdeh gAbl lkj dh 39oh yEch unh ekuk x;k gA

xxk dk enku mRrj e fgeky; vkj nf{k.k e foU/; ior J[kyk d e/; e fLFkr gA xxk d enku dk rhu ie[k Hkkxk e ckVk tk ldrk g ¼flg] 1971% 40½ %

1- Åijh xkx; enku ;k xxk ;euk&nkvkc tk ekV rkj ij io e bykgkckn rd Qyk gvk gA
2- e/; xkx; enku जो मोटे तौर पर पूर्वी उत्तर–प्रदेश तथा बिहार का भू–भाग है और jktegy igkfM;k rd foLrr gA
3- निम्न गांगेय मैदान का सीमांकन पश्चिम बंगाल और डेल्टा तक किया गया gA

lk/kkj.k :i l xxk d lekukUrj cgu okyh ;euk unh Åijh xxk?kkVh dh nf{k.korh lhek dk fu/kkj.k djrh gA ;|fi ;euk rFkk mldh lgk;d oukl] flU/k] crok] du आदि नदियों के द्वारा राजस्थान और मध्य प्रदेश के एक विस्तृत भूभाग का जल निस्तारण xxk d }kjk gh gkrk g] fdUr Åijh xxk ?kkVh e ik;% ;euk dk mRrjorh {k= gh fy;k tkrk gA

पश्चिम में यमुना नदी तथा पूर्व में 100 मीटर समोच्य रेखा के मध्य स्थित ऊपरी गंगा घाटी उत्तर प्रदेश के लगभग 1,49,129 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के अन्तर्गत स्थित है (सिंह 1971%133%A उत्तर में यह क्षेत्र 300 मीटर की समोच्चय रेखा के घेरे में है, जिसमें शारदा के पश्चिम में स्थित हिमालय के कुमायूँ गढ़वाल तक का क्षेत्र आता है। ऊपरी गंगाघाटी की पूर्व दिशा का विस्तार नेपाल की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक है तथा दक्षिण में यमुना नदी–बुन्देलखण्ड vkj mPp गंगा घाटी के मध्य सीमा का कार्य करती है। प्रशासकीय दृष्टि से ऊपरी गंगा घाटी e ngjknu fty dk NkMdj lEi.k dek;] ejB] vkxjk] :gy[k.M] vkj y[kuÅ lEHkkx

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 5, May- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

तथा आंशिक रूप से प्रयागराज और फैजाबाद सम्भाग सम्मिलित किये जाते हैं (मेमोरिया 1995% 1029½AÅijh xxk ?kkVh dh e[; unh xxk g] ft ldh nk i/kku ufn;k ?kk?kjk rFkk xkerh vkx pydj e/; xxk ?kkVh e xxk e foyhu gk tkrh gA ik;% lHkh ufn;k उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व दिशा में ही बहती हैं। हिमालय से उत्पन्न नदियों में गंगा तथा mldh lgk;d ufn;k ;euk] jkexxk rFkk ?kk?kjk vkfn ie[k gA _r lEcU/kh vR;f/kd उतार–चढ़ाव होने पर भी इन नदियों में वर्ष भर आवश्यक्तानुसार पानी रहता है। सरयूपार rFkk vo/k d enkuh Hkkx ?kk?kjk rFkk xkerh }kjk lhp tkr g] tcfd jkexxk :gy[k.M dk lhprh gA nf{k.k l vku okyh pEcy ;euk l feyu d io db fdeh rd ;euk d lekukUrj cgrh gA

मध्य गंगा घाटी के मैदान में कुछ विशेष प्रकार के पौधों का छोड़कर हर तरह की वनस्पतियाँ उगायी जाती हैं, जो कि यत्र–तत्र बिखरी हुई हैं। लगभग 50 वर्ष पहले भी इस {k= e txyh ouLifr;k d cM cM {k= FkA txyh tUr Hkh cgrk;r e FkA bue e[; रूप से काला हिरन, चीतल, नील गाय, लकड़बग्घा, भालू, सियार, लोमड़ी, शाही इत्यादि उल्लेखनीय हैं। जंगली क्षेत्रों का कृषि क्षेत्रों में परिवर्तन हुआ, फिर भी प्रमुख वनस्पतियों e ढाक, कैथा, बेल, पीपल, बरगद, गूलर, जामुन, आम, महुआ, शीशम, नीम, धतूर, मदार, सिहोर, :l vkfn dk mYy[k fd;k tk ldrk g ¼iky] 1987% 120½A o{kk e lcl vf/kd vke d बगीचे मिलते हैं, जो फल और लकड़ी दोनों दृष्टियों से लोगों को बहुत प्रिय हैं। Qyk e vke एक स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक फल माना जाता है। आँवला, बेल, कटहल के वृक्ष भी बगीचों e ik; tkr gA oreku e ckxk d fdukj rFkk [krk d eM ij cgr l ;fdfYkIVl d o{k Hkh yxk fn; x; gA cj] ve:n d cxhp Hkh dgh&dgh ik; tkr gA uhe] ccy] fpyfcy] yl<k ij {k= e ik; tkr gA ckl Hkh ik;% xkok d ikl n[ku dk feyrk gA [kk| rEckd, धान, बाजरा, सन, मूँग, उर्द, कोदो, सांवा, मूँगफली, शकरकन्द आदि mYy[kuh; gA

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 5, May- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

e/; xxk enku dh tyok; Åijh xxk d vi{kkdत शुष्क और निम्न गंगा के मैदान के नम जलवायु के बीच की है। ग्रीष्म ऋतु में इस क्षेत्र में प्रचण्ड गर्मी तथा शीत ऋतु में vR;f/kd BMd iMrh gA yxHkx 90% वर्षा मानसून से होती है। औसत वार्षिक वर्षा 100 leh l Hkh vf/kd gkrh gA e/; xxk d enku e io dh vपेक्षा पश्चिम में औसत वर्षा कम होती है। इसी तरह से उत्तर की तुलना में दक्षिण में वर्षा का औसत कम होता है। fnlEcj&tuojh d eghuk e U;ure vkj vf/kdre rkieku dk vklr yxHkx 24^0 lVhxV l 27^0 lVhxV rFkk eb e vklr rkieku c<dj 46^0 l0 rd gk tkrk gA ;|fi गंगा उत्तरांचल के उत्तरकाशी जिले के 5611 मीटर उँचे गंगोत्री ग्लेशियर से भागीरथी के uke l fudyrh g] fcgkj rd vkr vkr ble ;euk] xkerh] ?kk?kjk] /kkyh] fi.Mkj] vyduUnk] eUnkfduh] jkexxk vkfn ufn;k fey tkrh gA vUrr% ;g cxky dh [kkMh e fxj tkrh gAxxk d e/;orh enku d mRrj e fLFkr lyXu fgeky; d nf{k.kh <yk ij वर्षा अधिक होती है। गंगा के दक्षिण में स्थित संकरा मैदानी भाग उत्तरी मैदानी भाग की vi{kk lkxj ry l dN vf/kd Åpk g rFkk ;gk ik;}hih; iBkj l ufn;k }kjk fcNk; x; dkIk feVVh d volknk dk teko dkQh xgjkb rd gvk gA

xxk dh lgk;d ufn;k e lcl ie[k unh ?kk?kjk g] tk fgeky; ior l fudyrh gA ;g Qtkckn fty d mRrjh lhek ij iokfgr gkrh gA ikjkf.kd ijEijk d vulkj bl ifo= unh dk ekuljkoj झील से जहाँ ब्रम्हा ने विष्णु द्वारा बहाये गये आनन्द के आँसुओं को एकत्रित किया था, मुनि वशिष्ठ द्वारा जनता की प्रार्थना पर अयोध्या लाया गया था। इसीलिये सरयू को कभी–कभी वशिष्ठ की कन्या और वशिष्ठ गंगा भी कहा जाता है। fdonUrh g fd v;k/;k e xlrkj ?kkV पर भगवान श्री रामचन्द्र हमेशा के लिए गुप्त हुए थे। ;g unh uiky dh rjkb l fudydj cgjkbp tuin e iokfgr gkrh gA vYekMk e bl lj; Hkh dgr gA

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 5, May- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

भारत के औद्योगिक नक्शे पर चीनी को छोड़कर गंगा के मध्यवर्ती मैदान में कोई भारी उद्योग नही है। इस विशाल मैदानी भाग में खनिजों के अभाव के कारण कृषि से उपलब्ध संसाधनों पर ही आधारित उद्योग प्रधान है। चीनी के प्रमुख उद्योग होने से अधिकांश कारखाने mRrjh enkuh Hkkx e io l ydj pEikju] lkju] nofj;k] xkj[kij gkr g, xxk ,o ?kk?kjk d mRrj fLFkr enkuh Hkkx e miyC/k gA dN gh dkj[kku ?kk?kjk o xxk d nf{k.k में हैं। उत्तर प्रदेश में यह कारखाने सरयू के दक्षिण पटना, गया, इलाहाबाद, बलिया, vktex<] tkuij] Qtkckn] lYrkuij] okjk.klh tuink e ,d ;k nk dh l[;k e fLFkr g ¼feJ 1985½ 413&414½A mRrjh enkuh Hkkx e m|kx lhfer gA cjkuh e ry rFkk iVkdfedYl] jyo m|kx tekyij] xkj[kij] tV m|kx dfVgkj] leLrhij rFkk lgtuok ¼xkj[kij½ e fLFkr gA ;|fi lrh oL= m|kx d cM dkj[kku ugh g] ijUr ikojye rFkk g.Mye m|kx d e/;e ,o y?k ox d m|kxk d :i e lrh oL= m|kx पटना (पुलवरिया शरीफ), मधुबनी, बिहार शरीफ, बक्सर, गया, मुबारकपुर, मऊ, वाराणसी, tykyij Vk.Mk rFkk [kyhykckn e LFkkfir gA Hkkxyij viu Vlj d oL=k d fy, तथा वाराणसी बनारसी रेशम की साड़ी के लिए देश में विख्यात है। कालीन उद्योग के मुख्य केन्द्र मिर्जापुर एवं भदोही हैं, जो देशी एवं विदेशी बाजारों को कालीन का निर्यात करते हैं।

e/; xxk ?kkVh dh ifjofrr fLFkfr rFkk lkekftd&vkfFkd 0;oLFkk u tk fd lgL=k वर्ष की सभ्यता के पश्चात् व्;ofLFkr gb g] bl {k= dk lEi.k Hkkxkfyd l;fDr inku dh है। मध्य गंगा घाटी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास की दृष्टि से सम्पूर्ण गंगा घाटी में viuk egRoi.k LFkku j[krh gAपुरातात्विक अन्वेषणों के आलोक में हम मध्य गंगाघाटी के lkLdfrd vudम को स्पष्ट रूप से रेखांकित कर सकते हैं। कुछ दशक पूर्व मध्य गंगा घाटी e ekuo bfrgkl d Kku dk l= ,frgkfld dky l igy ugh igp ikrk FkkA e/; xxk घाटी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा की गयी खोजों ने इसे भारत के प्रागैतिहासिक मानचित्र पर रख दिया है (शर्मk ,o vU; 1980a½A ikjfEHkd uru dky e bl {k= e nf{k.k से मध्य पाषाणिक मानव के आगमन के प्रमाण मिलते हैं। इस क्षेत्र की प्रथम पाषाण संस्कृति

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 5, May- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

मध्य पाषाण काल से सम्बन्धित है, जिसे स्तरीकरण, उपकरण प्रकार और तकनीक के आधार ij rhu oxk e foHkkftr fd;k x;k g %

1- अनुपुरापाषाणकाल
2- अज्यामितीय मध्य पाषाणकाल
3- ज्यामितीय मध्य पाषाणकाल

इन संस्कृतियों के 200 से भी अधिक स्थल प्रकाश में आये हैं, जिनमें से तीन स्थलों सरायनाहर राय, महदहा और दमदमा का उत्खनन पुरातात्विक अन्वेषणों की दृष्टि से egRoi.k gA uo पाषाण संस्कृति के भी कई स्थल प्रकाश में आये हैं। कुछ स्थलों उत्खनन भी हुआ है, जो नवपाषाण संस्कृति के पुनर्निमाण में सहायक है। नवपाषाण काल के प्रमुख उत्खनित स्थलों में उत्तर प्रदेश में सोहगौरा, इमलीडीह, लहुरादेवा, झूँसी, grkiVVh rFkk fcgkj d fpjkn] ppj] drcij] luokj] rkjkMhg] iku LFkyk dk mYy[k fd;k tk ldrk gA xkre c) dk dk;{k= e[; :i l e/; xxk ?kkVh gh FkkA mud igy dk bl {k= dk bfrgkl vU/kdkj d vkoj.k l vkoRr FkkA bu LFkyk dk mR[kuu Hkkjrh; ijkrRo lo{k.k vkj bUस्टीट्यूट ऑफ एडवान्स स्टडी, शिमला द्वारा प्रो० बी०बी० लाल के निर्देशन में रामायण संस्कृति की खोज के सन्दर्भ में किया गया। अयोध्या में पहले काशी हिन्दु विश्वविद्यालय द्वारा भी उत्खनन किया गया था। इन स्थलों पर मिलने वाली सबसे पहली संस्कृति उत्तरी कृष्ण ओपदार पा= ijEijk ¼,u0ch0ih0MCy0½ d Bhd igy dh lLdfr g] ftl 800 b0i0 l 600 b0i0 dk le; inku fd;k tk ldrk gA bl idkj vc rd bl {k= e fd; x; ijkrkfRod v/;;uk l tk सांस्कृतिक क्रम प्रकाश में आया है, उसे निम्न संस्कृतियों के vUrxr j[kk tk ldrk g %

1- अनुपुरापाषाण काल
2- मध्य पाषाण काल
3- नव पाषाण काल
4- ताम्र पाषाण काल
5- ikjfEHkd ykg vkj ikjfEHkd ,frgkfld dky

lUnHk xUFk lph

vxoky] Mh0ih0] 1984] vkD;kykth vkQ bf.M;k] ub fnYyh lyDV cd lfol fIMhdVA

vxoky, डी0पी0, और शीला कुसुमगर, 1974, प्रीहिस्टारिका क्रोनोलॉजी एण्ड रेडियो कार्बन डेटिंग इन इण्डिया, दिल्लीः मुन्शीराम मनोहर लाल।

vYVdj] ,0,l0 vkj oh0d0 feJk] 1959] fjikV vku degkj ,Dldoslu ¼1951&55½] iVuk d0ih0 tk;loky bULVhV;VA

अंसारी, शाहिदक] 2001] fifgLVkfjd lVyeV iVu vkQ lkmFk&lUVy xxk oyh ,u इथनो आर्क्यालॉजिकल पर्सपेक्टिव, पी0एच0डी0 उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध, i.k nDdu dkyt ikLV xt,V fjlp bULVhP;VA

vkdykftdy lo vkQ bf.M;k&,uoy fjikV 1903&04A

vkdykftdy lo vkQ bf.M;k&,uoy fjikV 1909&10A

vkdykftdy lo vkQ bf.M;k&,uoy fjikV 1913&14A

vkyj d0vkj0] 1980] Qkuy fjeI Qke nh foU/;kt ,.M fn xxk oyh] th0vkj0 शर्मा, वी0डी0 मिश्र, डी0 मण्डल, बी0बी0 मिश्र और जे0एन0 पाल कृत विगनिंग्स आफ ,xोकल्चर में, इलाहाबादः अविनाश प्रकाशन

vkyj d0vkj0] 1990] LVMh t bu bf.M;u vkfd;kykth ,.M ify;kUVkykth] /kkjokM श्रीहरि प्रकाशन।

bf.M;u vkD;kykth , fj0; ¼vkb0,0vkj0½ 1956&57] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;kykth , fj0; 1959&60] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykt hk , fj0; 1960&61] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykt hk , fj0; 1961&62] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykt hk , fj0; 1962&63] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykt hk , fj0; 1963&64] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykt hk , fj0; 1967&68] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykt hk , fj0; 1968&69] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykt hk , fj0; 1971&72] ub fnYyhA

bf.M;u vkD;ykt hk , fj0; 1972&73] ub fnYyhA